प्रत्यय

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» प्रत्यय की परिभाषा और प्रकार

प्रश्न 1 (आसान). प्रत्यय किसे कहते हैं?
उत्तर – शब्द या धातु के अंत में जुड़कर अर्थ बदलने वाले शब्दांश।

प्रश्न 2 (आसान). कृत् प्रत्यय किसके साथ लगते हैं?
उत्तर – धातुओं के साथ।

प्रश्न 3 (मध्यम). 'पठ्' धातु में 'त्वा' प्रत्यय जोड़ने पर क्या शब्द बनेगा और उसका क्या अर्थ होगा?
उत्तर – पठित्वा (पढ़कर)

प्रश्न 4 (कठिन). कौन-से प्रत्यय पुल्लिंग शब्द को स्त्रीलिंग में बदलते हैं?
उत्तर – स्त्री प्रत्यय।

» कृत् प्रत्यय का परिचय

प्रश्न 5 (आसान). कृ + क्त्वा = ?
उत्तर – कृत्वा

प्रश्न 6 (आसान). गम + तुमुन् = ?
उत्तर – गन्तुम्

प्रश्न 7 (मध्यम). आ + दा + ल्यप् = ?
उत्तर – आदाय

प्रश्न 8 (कठिन). निम्नलिखित वाक्य में कृत् प्रत्यय युक्त पद छाँटिए: 'बालकः पुस्तकं पठितुं विद्यालयं गच्छति।'
उत्तर – 'पठितुम्' (पठ् + तुमुन्)

» क्त्वा प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)

प्रश्न 9 (आसान). कृ + क्त्वा = ?
उत्तर – कृत्वा

प्रश्न 10 (आसान). गम् + क्त्वा = ?
उत्तर – गत्वा

प्रश्न 11 (मध्यम). नम् + क्त्वा = ?
उत्तर – नत्वा

प्रश्न 12 (कठिन). पठित्वा' में कौन सा प्रत्यय है?
उत्तर – क्त्वा प्रत्यय

» ल्यप् प्रत्यय (उपसर्गयुक्त पूर्वकालिक क्रिया)

प्रश्न 13 (आसान). शब्द 'विहस्य' में कौन सा प्रत्यय है और क्यों?
उत्तर – ल्यप् प्रत्यय है, क्योंकि 'वि' उपसर्ग लगा है।

प्रश्न 14 (आसान). 'उप + कृ + ल्यप्' से क्या शब्द बनेगा?
उत्तर – उपकृत्य

प्रश्न 15 (मध्यम). वह पुस्तक पढ़कर आता है। (संस्कृत में 'पढ़कर' के लिए ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग करते हुए लिखें।)
उत्तर – सः पुस्तकम् पठित्वा आगच्छति। (यहाँ 'पठित्वा' होगा, क्योंकि 'पठ्' धातु के साथ कोई उपसर्ग नहीं है, तो 'क्त्वा' लगेगा, न कि 'ल्यप्'। यह एक चाल वाला प्रश्न था बच्चों!)

प्रश्न 16 (कठिन). वाक्य को ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग करके पुनः लिखें: 'शिष्यः शुल्कम् आनयति। सः गुरवे ददवान्।'
उत्तर – शिष्यः शुल्कम् आनीय गुरवे ददवान्।

» तुमुन् प्रत्यय (निमित्तार्थक क्रिया)

प्रश्न 17 (आसान). खाद् + तुमुन्
उत्तर – खादितुम्

प्रश्न 18 (आसान). पिब् + तुमुन्
उत्तर – पातुम्

प्रश्न 19 (मध्यम). निम्नलिखित वाक्य को तुमुन् प्रत्यय से पूरा करें: 'सीता फलानि _____ आपणं गच्छति।' (सीता फल _____ बाज़ार जाती है।)
उत्तर – क्रेतुम् (खरीदने के लिए)

प्रश्न 20 (कठिन). सही प्रत्यय चुनकर वाक्य पूरा करें: 'बालकः जलं _____ नदीं गच्छति।' (बच्चा पानी _____ नदी जाता है।) (विकल्प: पीत्वा / पातुम् / पायन)
उत्तर – पातुम्

» शतृ-शानच् प्रत्यय (वर्तमानकालिक विशेषण)

प्रश्न 21 (आसान). पठ् + शतृ (पुं. प्रथमा एकवचन) = ?
उत्तर – पठन्

प्रश्न 22 (आसान). सेव् + शानच् (स्त्री. प्रथमा एकवचन) = ?
उत्तर – सेवमाना

प्रश्न 23 (मध्यम). लिखन् बालकः हसति। (स्त्रीलिंग में बदलें)
उत्तर – लिखन्ती बालिका हसति।

प्रश्न 24 (कठिन). वाक्य को शतृ/शानच् प्रत्यय का प्रयोग करके दोबारा लिखिए: 'बालिका नृत्यति। सा गायति।' (अर्थात: लड़की नाचती है। वह गाती है।)
उत्तर – नृत्यन्ती बालिका गायति।

» क्त-क्तवतु प्रत्यय (भूतकालिक क्रिया)

प्रश्न 25 (आसान). धातु 'गम्' में 'क्त' प्रत्यय लगाकर तीनों लिंगों में रूप लिखिए।
उत्तर – गतः, गता, गतम्

प्रश्न 26 (आसान). धातु 'कृ' में 'क्तवतु' प्रत्यय लगाकर तीनों लिंगों में रूप लिखिए।
उत्तर – कृतवान्, कृतवती, कृतवत्

प्रश्न 27 (मध्यम). 'अहं पाठं अपठम्' को 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग करके बदलो।
उत्तर – अहं पाठं पठितवान्/पठितवती।

प्रश्न 28 (कठिन). 'बालकः कथां श्रुतवान्' को कर्मवाच्य में बदलो।
उत्तर – बालकेन कथा श्रुता।

» तव्यत्-अनीयर् प्रत्यय ('चाहिए' या 'योग्य' अर्थ में)

प्रश्न 29 (आसान). कृ धातु में तव्यत् प्रत्यय जोड़ने पर क्या बनेगा?
उत्तर – कर्तव्यम्

प्रश्न 30 (आसान). लिख् धातु में अनीयर् प्रत्यय जोड़ने पर क्या बनेगा?
उत्तर – लेखनीयम्

प्रश्न 31 (मध्यम). वाक्य पूरा करो: 'अस्माभिः गुरूपदेशः _____ (श्रु + तव्यत्)'
उत्तर – श्रवितव्यः

प्रश्न 32 (कठिन). वाक्य बनाओ: 'मुझसे कथा सुननी चाहिए।'
उत्तर – मया कथा श्रवण्या।

» यत्-ण्यत्-क्यप् प्रत्यय (चाहिए/योग्य विशेषण)

प्रश्न 33 (आसान). धातु 'नी' (ले जाना) के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ।
उत्तर – नेयः/नेया/नेयम्

प्रश्न 34 (आसान). धातु 'पठ्' (पढ़ना) के साथ 'ण्यत्' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ।
उत्तर – पाठ्यः/पाठ्या/पाठ्यम्

प्रश्न 35 (मध्यम). धातु 'ग्रह्' (ग्रहण करना) के साथ 'ण्यत्' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ।
उत्तर – ग्राह्यः/ग्राह्या/ग्राह्यम्

प्रश्न 36 (कठिन). धातु 'स्तु' (स्तुति करना) के साथ 'क्यप्' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ।
उत्तर – स्तुत्यः/स्तुत्या/स्तुत्यम्

» णिनि, ण्वुल, तृच् प्रत्यय (कर्तृवाचक संज्ञा)

प्रश्न 37 (आसान). पठ् + तृच् क्या बनेगा?
उत्तर – पठिता

प्रश्न 38 (आसान). लिख् + ण्वुल क्या बनेगा?
उत्तर – लेखकः

प्रश्न 39 (मध्यम). श्रु + ण्वुल क्या बनेगा? (ध्यान से वृद्धि नियम याद करो!)
उत्तर – श्रावकः

प्रश्न 40 (कठिन). दा + तृच् क्या बनेगा?
उत्तर – दाता

» क्तिन्, ल्युट् प्रत्यय (भाववाचक संज्ञा)

प्रश्न 41 (आसान). पठ् + क्तिन्
उत्तर – पठितिः

प्रश्न 42 (आसान). दृश् + ल्युट्
उत्तर – दर्शनम्

प्रश्न 43 (मध्यम). प्र + आप् + क्तिन्
उत्तर – प्राप्तिः

प्रश्न 44 (कठिन). वच् + क्तिन्
उत्तर – उक्तिः (यहाँ सन्धि के नियम से बदलाव होता है)

» तद्धित प्रत्यय का परिचय और मतुप्-वतुप्

प्रश्न 45 (आसान). शक्ति + मतुप् = ?
उत्तर – शक्तिमान्

प्रश्न 46 (आसान). विद्या + वतुप् = ?
उत्तर – विद्यावान्

प्रश्न 47 (मध्यम). बुद्धि + मतुप् = ?
उत्तर – बुद्धिमान्

प्रश्न 48 (कठिन). लक्ष्मी + मतुप् = ?
उत्तर – लक्ष्मीवान् (या लक्ष्मीमान्)

» इनि, तरप्, तमप् प्रत्यय (विशेषण)

प्रश्न 49 (आसान). ज्ञान + इनि = ?
उत्तर – ज्ञानी

प्रश्न 50 (आसान). सुंदर + तरप् = ?
उत्तर – सुंदरतरः

प्रश्न 51 (मध्यम). पटु + तमप् = ?
उत्तर – पटुतमः

प्रश्न 52 (कठिन). दो पहाड़ों में से कौन-सा ऊँचा है, इस भाव को व्यक्त करने के लिए 'उच्च' शब्द में कौन सा प्रत्यय लगेगा?
उत्तर – उच्चतरः (तरप्)

» मयट्, अण्, ठक्, इतच् प्रत्यय (प्रचुरता/संबंध/युक्त)

प्रश्न 53 (आसान). शब्द 'आनंद' में 'मयट्' प्रत्यय जोड़िए।
उत्तर – आनंदमयः

प्रश्न 54 (आसान). शब्द 'वसुदेव' में 'अण्' प्रत्यय जोड़िए।
उत्तर – वासुदेवः

प्रश्न 55 (मध्यम). शब्द 'शरीर' में 'ठक्' प्रत्यय जोड़िए और उसका अर्थ बताइए।
उत्तर – शारीरिकः, जिसका अर्थ है 'शरीर से संबंधित' या 'शारीरिक भाव वाला'।

प्रश्न 56 (कठिन). शब्द 'बुभुक्षा' (भूख) में 'इतच्' प्रत्यय जोड़कर पद बनाइए और वाक्य में प्रयोग कीजिए।
उत्तर – बुभुक्षितः। वाक्य: 'बुभुक्षितः बालकः भोजनम् याचते।' (भूखा बालक भोजन माँगता है।)

» त्व, तल्, यत्, थाल्, तसिल् प्रत्यय (भाववाचक/प्रकार/स्थान)

प्रश्न 57 (आसान). लघु + त्व = ?
उत्तर – लघुत्वम्

प्रश्न 58 (आसान). लघु + तल् = ?
उत्तर – लघुता

प्रश्न 59 (मध्यम). विद्वस् + त्व = ?
उत्तर – विद्वत्वम्

प्रश्न 60 (कठिन). दन्त + यत् = ?
उत्तर – दन्त्यम्

» स्त्री प्रत्यय का परिचय और टाप्, डाप्, चाप् (आ)

प्रश्न 61 (आसान). प्रथम् का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?
उत्तर – प्रथमा

प्रश्न 62 (आसान). सरल का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?
उत्तर – सरला

प्रश्न 63 (मध्यम). शिक्षक का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?
उत्तर – शिक्षिका

प्रश्न 64 (कठिन). गायिका किस पुल्लिंग शब्द से बना है?
उत्तर – गायक

» ङीप्, ङीष्, ङीन् (ई) प्रत्यय (स्त्रीलिंग)

प्रश्न 65 (आसान). निम्न में से कौन सा शब्द 'ई' प्रत्यय से बना है?
उत्तर – क) जननी

प्रश्न 66 (आसान). 'देवी' शब्द में कौन सा प्रत्यय लगा है?
उत्तर – ङीप् (ई)

प्रश्न 67 (मध्यम). 'श्रीमत्' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?
उत्तर – श्रीमती

प्रश्न 68 (कठिन). अगर कोई 'अभिवादन' करने वाला 'अभिवादयत्' है, तो स्त्रीलिंग में क्या होगा?
उत्तर – अभिवादयन्ती

» युवन् शब्द से 'ति' प्रत्यय

प्रश्न 69 (आसान). युवन् शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है?
उत्तर – युवतिः

प्रश्न 70 (आसान). युवन् शब्द के साथ कौन सा प्रत्यय लगता है?
उत्तर – ति

प्रश्न 71 (मध्यम). रिक्त स्थान भरिए: युवन् + ___ = युवतिः
उत्तर – ति

प्रश्न 72 (कठिन). निम्न में से कौन-सा स्त्रीलिंग रूप सही है: युवना, युवती, युवतिः?
उत्तर – युवतिः

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्रत्यय की परिभाषा बताइए और 'गम्' धातु में 'त्वा' प्रत्यय लगाने से क्या शब्द बनेगा?

› पहले प्रत्यय की परिभाषा समझते हैं: किसी भी मूल धातु या शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ या रूप में परिवर्तन लाने वाले शब्दांशों को प्रत्यय कहते हैं।

› अब 'गम्' धातु लेते हैं। 'गम्' का अर्थ है 'जाना'।

› इसमें 'त्वा' प्रत्यय जोड़ते हैं। 'त्वा' प्रत्यय 'करके' के अर्थ में आता है, और इसका 'त्वा' भाग ही शेष रहता है।

› तो 'गम् + त्वा' मिलकर बनेगा 'गत्वा'।

› इसका अर्थ होगा 'जाकर'।

› यह एक कृत् प्रत्यय का उदाहरण है, क्योंकि यह एक धातु (गम्) के साथ जुड़ा है।

उत्तर – गत्वा (जाकर)

उदाहरण 2. गुरुं प्रणम्य सः पठति। इस वाक्य में 'प्रणम्य' पद में कौन सा प्रत्यय है और क्यों?

› सबसे पहले पद को ध्यान से देखेंगे: 'प्रणम्य'।

› इसमें मूल धातु 'नम्' (झुकना) है।

› धातु के आगे 'प्र' उपसर्ग लगा हुआ है।

› जब धातु से पहले उपसर्ग होता है और 'करके' का अर्थ आता है, तो 'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

› अतः, 'प्र' (उपसर्ग) + 'नम्' (धातु) + 'ल्यप्' (प्रत्यय) = 'प्रणम्य' बना है।

› इसका अर्थ है 'प्रणाम करके'।

› यह अव्यय है, इसके रूप नहीं बदलते।

उत्तर – 'प्रणम्य' पद में 'ल्यप्' प्रत्यय है क्योंकि 'नम्' धातु से पहले 'प्र' उपसर्ग लगा है और यह 'प्रणाम करके' का अर्थ देता है।

उदाहरण 3. वाक्य को क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करके जोड़िए: रामः पुस्तकं पठति। सः विद्यालयं गच्छति।

› पहला वाक्य है 'रामः पुस्तकं पठति।' (राम किताब पढ़ता है।)

› दूसरा वाक्य है 'सः विद्यालयं गच्छति।' (वह विद्यालय जाता है।)

› यहाँ दो क्रियाएं हैं - 'पठति' (पढ़ना) और 'गच्छति' (जाना)। राम पहले किताब पढ़ता है, फिर विद्यालय जाता है।

› तो 'पठति' क्रिया को 'क्त्वा' प्रत्यय में बदलेंगे। 'पठ्' धातु में 'क्त्वा' लगाने पर 'पठित्वा' बनता है।

› अब हम दोनों वाक्यों को जोड़ेंगे। कर्ता (रामः) एक ही है, तो एक बार ही लिखेंगे।

› वाक्य बनेगा: रामः पुस्तकं पठित्वा विद्यालयं गच्छति।

› अर्थ: राम किताब पढ़कर विद्यालय जाता है।

उत्तर – रामः पुस्तकं पठित्वा विद्यालयं गच्छति।

उदाहरण 4. शब्द 'आगत्य' में धातु और प्रत्यय अलग करके लिखें।

› सबसे पहले शब्द को देखें: 'आगत्य'।

› अब देखें कि क्या इसमें कोई उपसर्ग है? हाँ, 'आ' एक उपसर्ग है।

› उपसर्ग हटाने के बाद हमें 'गत्य' मिलता है। इसमें मूल धातु 'गम्' है (जो 'गच्छ्' के रूप में चलता है लेकिन प्रत्यय लगने पर 'गम्' से जुड़ता है)।

› चूंकि उपसर्ग 'आ' लगा हुआ है, तो 'क्त्वा' की जगह 'ल्यप्' प्रत्यय आएगा।

› तो, यह 'आ + गम् + ल्यप्' होगा।

उत्तर – आ + गम् + ल्यप्

उदाहरण 5. वाक्य में 'के लिए' अर्थ में 'गम्' धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग करें: 'अहं विद्यालयम् _____ गच्छामि।' (मैं विद्यालय _____ जाता हूँ।)

› सबसे पहले, धातु को पहचानेंगे। यहाँ धातु है 'गम्' जिसका अर्थ है 'जाना'।

› अब, इसमें 'तुमुन्' प्रत्यय जोड़ेंगे। 'गम् + तुमुन्' मिलकर बनता है 'गन्तुम्'।

› इस शब्द का अर्थ होगा 'जाने के लिए'।

› अब इसे वाक्य में भरेंगे: 'अहं विद्यालयम् गन्तुम् गच्छामि।' (मैं विद्यालय जाने के लिए जाता हूँ।)

उत्तर – गन्तुम्

उदाहरण 6. वाक्य को शतृ/शानच् प्रत्यय का प्रयोग करके दोबारा लिखिए: 'बालकः विद्यालयं गच्छति। सः पठति।' (अर्थात: लड़का विद्यालय जाता है। वह पढ़ता है।)

› पहला वाक्य है 'बालकः विद्यालयं गच्छति।' (लड़का विद्यालय जाता है।)

› दूसरा वाक्य है 'सः पठति।' (वह पढ़ता है।)

› हमें इसे 'जाता हुआ लड़का पढ़ता है' ऐसे बनाना है।

› 'गच्छति' क्रिया 'गम्' धातु से बनी है, जो परस्मैपद है, इसलिए 'शतृ' प्रत्यय लगेगा।

› गम् + शतृ = गच्छत् (मूल रूप)

› अब हमें इसे 'बालकः' (पुल्लिंग, प्रथमा एकवचन) के अनुसार ढालना होगा, क्योंकि 'गच्छत्' लड़के का विशेषण बन रहा है।

› 'गच्छत्' का पुल्लिंग प्रथमा एकवचन रूप 'गच्छन्' होता है।

› तो वाक्य बनेगा: 'गच्छन् बालकः पठति।' (जाता हुआ लड़का पढ़ता है।)

उत्तर – गच्छन् बालकः पठति।

उदाहरण 7. नीचे दिए गए वाक्यों को क्त या क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग करके भूतकाल में बदलिए।

1. रामः पुस्तकं पठति।

2. सीता जलं पिबति।

› पहला वाक्य: 'रामः पुस्तकं पठति।' यहाँ 'पठति' क्रिया सकर्मक है। अगर हम इसे कर्तृवाच्य में रखना चाहें तो क्तवतु लगाएंगे, राम पुल्लिंग है तो 'पठितवान्' आएगा। और अगर हम इसे कर्मवाच्य में बदलना चाहें तो क्त प्रत्यय लगेगा, और पुस्तक नपुंसक लिंग है, तो 'पठितम्' बनेगा और कर्ता में तृतीया विभक्ति लगेगी - 'रामेण'।

› तो 'रामः पुस्तकं पठति' का कर्तृवाच्य में क्तवतु के साथ होगा: 'रामः पुस्तकं पठितवान्।' (राम ने पुस्तक पढ़ी।)

› और कर्मवाच्य में क्त के साथ होगा: 'रामेण पुस्तकं पठितम्।' (राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी गई।)

› दूसरा वाक्य: 'सीता जलं पिबति।' यहाँ 'पिबति' क्रिया भी सकर्मक है। सीता स्त्रीलिंग है।

› कर्तृवाच्य में क्तवतु के साथ: 'सीता जलं पीतवती।' (सीता ने पानी पिया।)

› कर्मवाच्य में क्त के साथ: 'सीतया जलं पीतम्।' (सीता के द्वारा पानी पिया गया।)

उत्तर – 1. कर्तृवाच्य (क्तवतु): रामः पुस्तकं पठितवान्। कर्मवाच्य (क्त): रामेण पुस्तकं पठितम्।

2. कर्तृवाच्य (क्तवतु): सीता जलं पीतवती। कर्मवाच्य (क्त): सीतया जलं पीतम्।

उदाहरण 8. वाक्य बनाओ: 'बालक को पाठ पढ़ना चाहिए।'

› सबसे पहले, 'पढ़ना चाहिए' के लिए 'पठ्' धातु में तव्यत् प्रत्यय जोड़ेंगे। 'पठ् + तव्यत्' से बनेगा 'पठितव्य'।

› अब, क्योंकि यह कर्मवाच्य में प्रयोग होता है, तो कर्ता 'बालक' में तृतीया विभक्ति लगेगी – 'बालकेन'।

› कर्म 'पाठ' में प्रथमा विभक्ति लगेगी – 'पाठः'।

› और 'पठितव्य' शब्द कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होगा। 'पाठः' पुल्लिंग एकवचन है, तो 'पठितव्य' का पुल्लिंग एकवचन रूप 'पठितव्यः' होगा।

› तो पूरा वाक्य बनेगा: 'बालकेन पाठः पठितव्यः।'

उत्तर – बालकेन पाठः पठितव्यः।

उदाहरण 9. नीचे दी गई धातुओं के साथ सही प्रत्यय (यत्/ण्यत्/क्यप्) लगाकर 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ वाले शब्द बनाएं: 1. कृ, 2. दा, 3. शास्

› 1. धातु 'कृ' (करना) ऋकारान्त है, इसके साथ 'ण्यत्' प्रत्यय लगेगा। 'कृ + ण्यत्' से 'कार्य' (करने योग्य/करना चाहिए) बनेगा।

› 2. धातु 'दा' (देना) अजन्त (आ-स्वरान्त) है, इसके साथ 'यत्' प्रत्यय लगेगा। 'दा + यत्' से 'देय' (देने योग्य/देना चाहिए) बनेगा।

› 3. धातु 'शास्' (कहना/उपदेश देना) कुछ विशेष धातुओं में से एक है जिसके साथ 'क्यप्' प्रत्यय लगता है। 'शास् + क्यप्' से 'शिष्य' (जिसे उपदेश देना चाहिए/उपदेश के योग्य) बनेगा।

› ध्यान दें कि सभी शब्दों के तीनों लिंगों में रूप होते हैं।

उत्तर – 1. कृ + ण्यत् = कार्यः/कार्या/कार्यम्

2. दा + यत् = देयः/देया/देयम्

3. शास् + क्यप् = शिष्यः/शिष्या/शिष्यम्

उदाहरण 10. 'कृ' धातु में 'ण्वुल' और 'तृच्' प्रत्यय लगाकर 'कर्ता' अर्थ में शब्द बनाइए।

› पहले 'कृ' धातु में 'ण्वुल' प्रत्यय लगाते हैं। 'ण्वुल' का 'वु' बदलकर 'अक' हो जाता है।

› 'कृ' धातु के 'ऋ' को 'वृद्धि' करके 'आर्' बनाते हैं, तो यह 'कार्' जैसा हो जाता है।

› अब 'कार्' में 'अक' जोड़ते हैं तो बनता है 'कारकः'।

› अब 'कृ' धातु में 'तृच्' प्रत्यय लगाते हैं। 'तृच्' का 'तृ' बचता है।

› यहां भी 'कृ' धातु के 'ऋ' को 'गुणादेश' से 'अर्' बनाते हैं, तो यह 'कर्' जैसा हो जाता है।

› अब 'कर्' में 'तृ' जोड़ते हैं तो बनता है 'कर्तृ'।

› फिर टाप् प्रत्यय आदि से पुल्लिंग में इसका रूप 'कर्ता' बनता है।

› तो 'कृ + ण्वुल = कारकः' और 'कृ + तृच् = कर्ता'।

› याद रखना, 'कारकः' मतलब 'करने वाला' (कारक भी होता है, पर यहाँ कर्ता अर्थ में), और 'कर्ता' का मतलब भी 'करने वाला'।

उत्तर – कृ + ण्वुल = कारकः (करने वाला), कृ + तृच् = कर्ता (करने वाला)

उदाहरण 11. कृ + क्तिन् और कृ + ल्युट् से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

› पहला, 'कृ + क्तिन्' को देखते हैं। 'क्तिन्' का 'ति' शेष बचता है। 'कृ' धातु में 'ति' जुड़कर बनता है 'कृतिः'।

› क्योंकि क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द हमेशा स्त्रीलिंग होते हैं, तो यह 'कृतिः' (जैसे 'मतिः') बनेगा।

› दूसरा, 'कृ + ल्युट्' को देखते हैं। 'ल्युट्' का 'यु' बचता है, जिसका 'अन' हो जाता है।

› अब 'कृ' धातु में 'अन' जुड़ता है, तो 'करण' बनता है।

› क्योंकि ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द हमेशा नपुंसक लिंग होते हैं, तो यह 'करणम्' (जैसे 'फलम्') बनेगा।

उत्तर – कृ + क्तिन् = कृतिः (स्त्रीलिंग); कृ + ल्युट् = करणम् (नपुंसक लिंग)

उदाहरण 12. शब्द 'गुण' में 'वाला' अर्थ में सही तद्धित प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए।

› सबसे पहले, शब्द 'गुण' को देखो। इसका अंत 'अ' स्वर से हो रहा है।

› क्योंकि यह अकारान्त शब्द है, इसलिए इसके साथ 'वाला' अर्थ में 'वतुप्' प्रत्यय लगेगा।

› अब, 'गुण + वतुप्' को जोड़ेंगे। 'वतुप्' का 'वत्' शेष रहता है।

› तो यह बनेगा 'गुणवत्'।

› और पुल्लिङ्ग में इसके रूप 'भवत्' की तरह चलते हैं, इसलिए यह बनेगा 'गुणवान्'।

उत्तर – गुणवान्

उदाहरण 13. सही प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए: 'बल' (शक्ति वाला), 'तीव्र' (दो में से अधिक तेज़), 'श्रेष्ठ' (सबमें सबसे अच्छा)।

› पहला शब्द है 'बल' और अर्थ है 'शक्ति वाला'। 'वाला' अर्थ के लिए हम 'इनि' प्रत्यय का प्रयोग करते हैं। तो, बल + इनि = बली।

› दूसरा शब्द है 'तीव्र' और अर्थ है 'दो में से अधिक तेज़'। 'दो की तुलना' के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। तो, तीव्र + तरप् = तीव्रतरः।

› तीसरा शब्द है 'श्रेष्ठ' और अर्थ है 'सबमें सबसे अच्छा'। 'दो से अधिक में सर्वश्रेष्ठ' के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। तो, श्रेष्ठ + तमप् = श्रेष्ठतमः।

उत्तर – बली, तीव्रतरः, श्रेष्ठतमः

उदाहरण 14. शब्द 'सुख' में 'मयट्' प्रत्यय जोड़कर पद बनाइए और उसका अर्थ बताइए।

› सबसे पहले, मूल शब्द 'सुख' है।

› इसमें 'मयट्' प्रत्यय जोड़ना है।

› मयट् प्रत्यय का 'मय' भाग बचता है।

› तो 'सुख + मय' मिलकर 'सुखमय' बनता है।

› अगर पुल्लिंग में बनाना है तो 'सुखमयः' होगा, अगर नपुंसक लिंग में तो 'सुखमयम्', और स्त्रीलिंग में 'सुखामयी' भी हो सकता है।

› इसका अर्थ होगा 'सुख से भरा हुआ' या 'सुख से युक्त'।

› उदाहरण वाक्य: 'सुखमयम् जीवनम्।' (सुख से भरा जीवन)

› उदाहरण वाक्य: 'सुखमयः संसारः।' (सुख से युक्त संसार)

उत्तर – सुख + मयट् = सुखमयः (पुल्लिंग) / सुखमयम् (नपुंसकलिंग) / सुखमयी (स्त्रीलिंग) जिसका अर्थ है 'सुख से भरा हुआ' या 'सुख से युक्त'।

उदाहरण 15. गुरु शब्द में 'त्व' और 'तल्' प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाइए।

› गुरु + त्व: यहाँ 'त्व' प्रत्यय जुड़ने पर शब्द 'गुरुत्वम्' बनेगा। यह नपुंसक लिंग एकवचन में होगा।

› गुरु + तल्: यहाँ 'तल्' प्रत्यय जुड़ने पर इसका 'ता' शेष रहता है, तो शब्द 'गुरुता' बनेगा। यह स्त्रीलिंग एकवचन में होगा।

उत्तर – गुरुत्वम्, गुरुता

उदाहरण 16. 'सेवक' शब्द को स्त्रीलिंग में बदलिए।

› सबसे पहले पहचानिए कि 'सेवक' शब्द का अंत किस वर्ण से हो रहा है। 'क' के अंत में 'अ' की ध्वनि है, तो यह अकारान्त पुल्लिंग शब्द है।

› अब, दूसरा नियम याद कीजिए: यदि पुल्लिंग शब्द के अंत में 'अक' हो तो 'आ' प्रत्यय लगाने पर 'इक' हो जाता है।

› यहाँ 'सेवक' में 'क' से पहले 'अ' है, तो यह 'अक' जैसा ही है।

› 'सेवक' के 'अक' को 'इक' में बदलेंगे, तो यह 'सेविक' बन जाएगा।

› फिर इसमें 'आ' प्रत्यय जोड़ देंगे।

› 'सेविक' + 'आ' = 'सेविका'।

› तो 'सेवक' का स्त्रीलिंग 'सेविका' हुआ।

उत्तर – सेविका

उदाहरण 17. 'गुणिन्' शब्द में 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्द बनाओ।

› सबसे पहले शब्द के अंत में 'न्' अक्षर पर ध्यान दें।
› नियम के अनुसार, 'न्' हटाकर 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है।
› 'गुणिन्' में से 'न्' हटा तो 'गुणि' बचा।
› इसमें 'ई' (दीर्घ ई) जोड़ेंगे तो 'गुणिनी' बनेगा।
› तो 'गुणिन् + ई = गुणिनी'।

उत्तर – गुणिनी

उदाहरण 18. युवन् शब्द में 'ति' प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग रूप लिखिए।

› हमें 'युवन्' शब्द दिया गया है।
› नियम के अनुसार, 'युवन्' शब्द का स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय का प्रयोग करते हैं।
› 'युवन्' में 'ति' जोड़ने पर 'न्' का लोप हो जाता है (गायब हो जाता है)।
› और हमें 'युवतिः' प्राप्त होता है।

उत्तर – युवतिः

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• प्रत्यय के प्रकार और उनके उदाहरण, खासकर क्त्वा, ल्यप् और तुमुन् प्रत्ययों के उदाहरणों को अच्छे से याद कर लेना, क्योंकि ये सीधे-सीधे बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं।

• कृत् प्रत्यय से अक्सर 2-3 नंबर के प्रश्न आते हैं, जिसमें आपको प्रत्यय जोड़ना या अलग करना होता है, या वाक्य में प्रत्यय युक्त पद पहचानना होता है। इसलिए सभी प्रमुख कृत् प्रत्ययों और उनके नियमों को अच्छे से याद कर लेना।

• बोर्ड परीक्षा में 'क्त्वा' प्रत्यय से धातु और प्रत्यय को अलग करने या दो वाक्यों को 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग करके जोड़ने वाले प्रश्न ज़रूर आते हैं। अच्छे से अभ्यास करना।

• यह प्रत्यय बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'प्रत्यय संयोजन' (जोड़ना) और 'प्रत्यय वियोजन' (अलग करना) दोनों तरह के प्रश्नों में पूछा जाता है। उदाहरणों को ध्यान से देखना।

• बोर्ड परीक्षा में, 'तुमुन्' प्रत्यय के प्रयोग वाले वाक्य ज़रूर आते हैं, खासकर रिक्त स्थान भरने या प्रत्यय को अलग करने वाले प्रश्नों में। 'के लिए' अर्थ का ध्यान रखें!

• यह प्रत्यय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! वाक्य प्रयोग में विशेष्य के अनुसार लिंग, वचन और विभक्ति का ध्यान रखना ज़रूरी है, नहीं तो नंबर कट सकते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्यय से जुड़े वाक्य परिवर्तन (वाच्य परिवर्तन) या रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न अक्सर आते हैं। इनके लिंग, वचन और कारक के प्रयोग पर खास ध्यान देना।

• बोर्ड परीक्षा में अक्सर धातुओं के साथ इन प्रत्ययों को जोड़कर सही रूप लिखने या वाक्यों में सही प्रत्ययान्त पद भरने के प्रश्न आते हैं। कर्मवाच्य के नियमों को ध्यान से अभ्यास करना, क्योंकि प्रत्यय का रूप कर्म के अनुसार बदलता है।

• इन प्रत्ययों के प्रयोग स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं – यह बात बोर्ड परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। किस धातु के साथ कौन-सा प्रत्यय लगेगा, इसे उदाहरणों के साथ अच्छी तरह रट लेना।

• इन प्रत्ययों में 'वृद्धि' और 'गुणादेश' के नियमों पर विशेष ध्यान दें, खासकर ण्वुल प्रत्यय में। परीक्षा में अक्सर यहीं गलती होती है।

• क्तिन् और ल्युट् प्रत्ययों के लिंग नियम (स्त्रीलिंग/नपुंसक लिंग) को याद रखना बहुत ज़रूरी है, सीधे प्रश्न आते हैं।

• मतुप् और वतुप् प्रत्ययों में किस शब्द के साथ कौन सा लगेगा, यह पहचानना परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है, इसलिए इन दोनों के अंतर को अच्छी तरह समझना और अभ्यास करना।

• इन प्रत्ययों से अक्सर 1-2 अंक के प्रश्न आते हैं जिसमें प्रत्यय लगाकर शब्द बनाना होता है या दिए गए शब्द में प्रत्यय पहचानना होता है। तरप् और तमप् के अंतर को ध्यान से समझ लेना, यह अक्सर पूछा जाता है।

• ये प्रत्यय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी हैं, खासकर 'त्व' और 'तल्'। उनके लिंग और धातु-रूपों को अच्छे से याद कर लेना।

• यह 'अक' वाले शब्दों का 'इक' में बदलना बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। 'बालक' से 'बालिका' और 'शिक्षक' से 'शिक्षिका' जैसे उदाहरणों को अच्छे से याद कर लेना, क्योंकि इसमें बच्चे अक्सर गलती करते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में 'ई' प्रत्यय से बने शब्दों को पहचानना और पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में बदलना अक्सर पूछा जाता है। खासकर 'कर्तृ' या 'गुणिन्' जैसे उदाहरणों पर ध्यान देना।

• यह 'युवन्' शब्द वाला 'ति' प्रत्यय कई बार सीधा एक या दो नंबर के प्रश्न में पूछ लिया जाता है, इसलिए इसे ख़ास तौर पर याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› प्रत्यय: शब्द/धातु के अंत में; कृत्, तद्धित, स्त्री तीन प्रकार।

› कृत् प्रत्यय: धातुओं से जुड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय बनाते हैं। (क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्)

› क्त्वा प्रत्यय = 'करके' अर्थ में, पूर्वकालिक क्रिया, अव्यय रूप।

› ल्यप् = उपसर्ग + धातु + 'करके' (अव्यय)

› तुमुन् प्रत्यय = 'के लिए' अर्थ में, क्रिया का प्रयोजन, अव्यय।

› शतृ-शानच्: 'करता हुआ/करती हुई' अर्थ, विशेषण, रूप बदलते हैं।

› क्त-क्तवतु: भूतकालिक क्रिया। क्त - कर्म/भाववाच्य। क्तवतु - कर्तृवाच्य।

› तव्यत्-अनीयर् प्रत्यय: 'चाहिए/योग्य' अर्थ, कर्मवाच्य/भाववाच्य, कर्ता तृतीया, कर्म प्रथमा।

› यत्, ण्यत्, क्यप् - 'चाहिए/योग्य' अर्थ; धातु के प्रकार पर निर्भर।

› णिनि, ण्वुल (अक), तृच् (तृ): कर्ता अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

› क्तिन् (ति) स्त्रीलिंग, भाव; ल्युट् (अन) नपुंसक लिंग, भाव।

› तद्धित प्रत्यय संज्ञा/विशेषण से नए शब्द, मतुप्-वतुप् 'वाला' अर्थ में।

› इनि (वाला/युक्त), तरप् (दो में बेहतर), तमप् (सब में सर्वश्रेष्ठ) - विशेषण प्रत्यय।

› त्व/तल् (भाववाचक), यत् (अवयव से होने वाला), थाल् (प्रकार), तसिल् (पंचमी अर्थ)

› स्त्री प्रत्यय: पुल्लिंग को स्त्रीलिंग में बदलना; 'आ' (टाप्) से अकारान्त में बदलाव, 'अक' का 'इक' में परिवर्तन।

› ऋकारान्त, नकारान्त, अकारान्त शब्दों को 'ई' प्रत्यय से स्त्रीलिंग बनाना (ङीप्, ङीष्, ङीन्).

› युवन् + ति = युवतिः (युवन् शब्द का स्त्रीलिंग)